एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखे विवेक।
रूहें अर्स का बल अर्स के, जो हक जात हैं एक।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने अपने संसार की जबान से थोड़ा सा बताया है, पर परमधाम में इश्क की महिमा बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के अंग की जो सखियां हैं, उनकी शक्ति परमधाम में इश्क ही है।

ख्वाब बैठ इन अर्स में, हकें देखाया तुमको।
महामत कहे ए मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! संसार में बैठकर अखण्ड परमधाम के सुख श्री राजजी महाराज ने तुमको दिखाए हैं। इन्हें पहचान कर अपने दिल में धारण करना।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ १३३७ ॥

पसु पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब।। १ ।।

श्री राजजी महाराज जब पशु-पक्षियों पर सवारी करने की इच्छा ही करते हैं तो सभी पशु-पक्षी जहां रहते हैं, वहां से आकर पहुंच जाते हैं।

अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल।
तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल।। २ ।।

रूहें जिन पशु-पक्षियों के ऊपर सवारी करना चाहती हैं, वह पहले ही जान जाते हैं और सेवा में आकर हाजिर हो जाते हैं।

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कई अनेक।
कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक।। ३ ।।

केशरी (सिंह), बब्बर शेर, चीते, हाथी और कई किस्म के जानवर अपनी पीठ पर बैठने की जीन (काठी) कसे हुए सेवा में हाजिर हो जाते हैं। इनकी हकीकत कहां तक बताएं?

कई बिध अस्वारी होत है, बुजरक जो जानवर।
जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर।। ४ ।।

ऐसे बड़े सुन्दर जानवरों की सवारी की लीला होती है। उनके ऊपर सुन्दर काठियों की शोभा कैसे कहें? यह इनके अंग की ही शोभा है।

घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत।। ५ ।।

घोड़ों के भी पंख होते हैं यह आकाश में उड़ते हैं। कूदने में किसी तरह की कमी नहीं करते। इस तरह से सवारी के सुख बेशुमार हैं।

Nijanand App

कई बिध खेल रूहन के, मन वेगी जानवर।
तिन पर अस्वारी करके, चढ़त आसमान पर।। ६ ।।

मन के समान तेज चलने वाले जानवर जिनके ऊपर रूहें सवार होती हैं, उनकी चाहना के अनुसार ही आसमान तक उड़ते हैं।

सोभा लेत बनमें रूहें, अस्वार होत मिल कर।
पसु पंखी दौड़ें मन ज्यों, जित जिमी बन बिगर।। ७ ।।

वन के अन्दर रूहें सवारी पर मिलकर चलती हैं, तो उनकी शोभा बेमिसाल होती है। पश्चिम की चौगान में यह पशु-पक्षी मनवेगी चाल से चलते हैं।

जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ीरूह रूहें अस्वार।
पसु पंखी सबे मिले, हर जातें फौजें न पार।। ८ ।।

जब श्री राजश्यामाजी व रूहें सवार होते हैं तो हर जाति के पशु-पक्षी मिलकर फौज की तरह आगे चलते हैं।

कई जातें पसुअन में, हर जातें गिनती अपार।
यों जातें जानवरों में, हर जातें नहीं सुमार।। ९ ।।

पशुओं की कई जातियां (किस्में) हैं हर जातियों में बेशुमार गिनती है। इसी तरह से जानवरों में भी शोभा है।

पसु पंखी जो बन में, सब आवें करने दीदार।
राज स्यामाजी रूहें, जब कबूं होवें अस्वार।। १० ।।

जब श्री राजश्यामाजी और रूहें सवारी करते हैं, तो उस समय वन के सब पशु-पक्षी दर्शन करने आते हैं।

हर फौजों बाजे बजें, हर फौजों निसान।
भांत भांत रंग राखत हैं, आप अपनी पेहेचान।। ११ ।।

हर पशु-पक्षी की फौज में अलग-अलग बाजे बजते हैं। अलग-अलग निशान (झण्डा) हैं। अपने अलग-अलग रंगों के सिनगार करके आते हैं।

एह जुबां केती कहूं, अलेखे विस्तार।
एक जात की फौज ना गिन सकों, तिन हर फौजों कई सिरदार।। १२ ।।

यहां की शोभा का बहुत विस्तार है। कहां तक वर्णन करूं? एक-एक जाति की ही कई फौजें हैं। हर फौज के अन्दर कई सिरदार (प्रधान) हैं।

कई फौजें तिन सिरदार की, हर फौजों कई जमातदार।
गिनती तिन जमात की, होवे नहीं सुमार।। १३ ।।

इन सिरदारों की भी कई फौजें हैं और हर फौज में कई जमातदार हैं और इनकी जमातों की गिनती बेशुमार है।

Nijanand App

यों जुदी जुदी जातें चलते, दाएं बाएं मिसल।
इंतमाम सबों में अति बड़ा, या आगूं या पीछल।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के दाएं-बाएं, आगे-पीछे, जुदा-जुदा जाति के जानवर व्यवस्थित रूप से चलते हैं।

आगे पीछे फौज के, चोपदार बड़े बांदर।
दाएं बाएं मिसल अपनी, फौज रखें बराबर।। १५ ।।

फौज के आगे-पीछे नकीब (चोपदार, हजूरी) बन्दर अपनी-अपनी जमात को सेना के दाएं-बाएं रखते हुए चलते हैं।

कई फौजें पसुअन की, और कई फौजें जानवर।
सुआ मैना नकीब तिनमें, फौज रखें मिसल पर।। १६ ।।

कई फौजें पशुओं की हैं। कई फौजें जानवरों की हैं। जिनमें तोता और मैना नकीब (चारण बंदीजन) की तरह श्री राजजी महाराज के गुण गाते हुए फौज को एक लाइन में चलाते हैं।

कई जातें देखे जवेर, अर्स के भूखन।
जंग करें जानवरों, जो परों पर चित्रामन।। १७ ।।

परमधाम के जवेरात और आभूषणों की किरणें जानवरों के परों के चित्रों से टकराती हैं।

पर जो पसुअन के, सो अतंत सोभा लेत।
कहा करें ए भूखन, पसु ऐसी सोभा देत।। १८ ।।

पशुओं के पर बहुत सुन्दर हैं। इनके सामने आभूषणों की शोभा भी फीकी हो जाती है। यह ऐसी शोभा वाले हैं।

इनो रोम की जो रोसनी, सो उठत माहें आसमान।
जंग करें जवेरों सों, कोई सके न काहू भान।। १९ ।।

इनके रोम-रोम की रोशनी आकाश तक जाती है और जवेरों की तरंगों से टकराती है। कोई किसी को कम नहीं कर पाती है।

एक रोम जोत आसमान में, रही रोसनी भराए।
तो जो एते पसु पंखी, सो जोत क्यों कही जाए।। २० ।।

एक रोम की ही रोशनी आकाश में भर जाती है तो इतने सम्पूर्ण पशु-पक्षियों की ज्योति का कैसे वर्णन करूं?

ए दिल जाने रूहसों, मुख जुबां पोहोंचे नाहें।
ए मोमिन होए सो विचारसी, अपने हिरदे माहें।। २१ ।।

यह रूहें दिल में जानती हैं। उस सुख को जबान से कैसे कहूं? जो मोमिन होंगे वह अपने हृदय में इसे विचारकर लेंगे।

सो भूखन जो अर्स के, सब पेहेरे मन चाहे।
सिनगार किया सब लसकरें, ए देखो मन ल्याए।। २२ ।।

परमधाम के जितने भी आभूषण हैं उन्हें सब अपनी इच्छा के अनुसार पहनते हैं और इस तरह से पूरा लश्कर सिनगार करके चलता है। यह सब अपने मन में विचार करके देखो।

Nijanand App

एक जरे जिमी की रोसनी, सो ढांपे कई कोट सूर।
तो जिमी पहाड़ मोहोलन को, सब कैसा होसी नूर।। २३ ।।

यहां की जमीन के एक कण की रोशनी में करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं तो फिर पहाड़ और महलों की रोशनी कैसी होगी? इसका अनुमान लगा लें।

बन जंगल या जिमी, एक दूजे से प्रकास।
विचार देखो ए मोमिनों, नूर कैसा भया आकास।। २४ ।।

वन, जंगल या जमीन का प्रकाश एक-दूसरे से अधिक है। हे मोमिनो! विचार करके देखो। इन सबका नूर आकाश में जगमगा रहा है।

ए नूर जिमी बन लसकर, कहा कहूं रूहों रोसन।
और तखत जो हक का, तुम विचार देखो मोमिन।। २५ ।।

यहां की जमीन का, वन का, फौज का, रूहों का और श्री राजजी महाराज जिस तख्त पर बिराजते हैं, इन सबका नूर बेशुमार है। हे मोमिनो! विचार करके देखो मैं कैसे तुमको बताऊं?

अब नूर बिलंद जो हक का, ले उठ्या सब का नूर।
बन जिमी आकास सब, ए देखो एक जहूर।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज का नूर महान है। इसके अन्दर सबके नूर समा जाते हैं। इस तरह से वन की, जमीन की और आकाश की सब एक ही शोभा बन जाती है।

आगूं केसरी कोतल, अति खूबी ले खेलत।
बाघ चीते घोड़े हाथी, नट ज्यों नाचत।। २७ ।।

आगे-आगे सवारी में सजा हुआ सिंह चलता है। जो बड़ी अदभुत शोभा का खेल करता है। सिंह के पीछे बाघ, चीते, घोड़े, हाथी नट के समान नाचते हैं।

अव्वल हार केसरिन की, दूजी हार बाघन।
हार तीसरी सियाहगोस की, चौथी हार चीतन।। २८ ।।

पहली लाइन में बब्बर शेर हैं, दूसरी में बाघ हैं तीसरी में सियार हैं। चौथी हार चीतों की है।

दीप सुअर रोझ रीछड़े, बैल साम्हर मृग मेढ़े।
हरन अरन बकर कूकर, फील गिमल घोड़े गैंड़े।। २९ ।।

फिर द्वीपी (तेंदुआ), सूअर, रीछ, रोझ (नीलगाय) बैल, सांभर, मृग, मेढ़े (भेड़), हिरन, जंगली भैंसा, बकरी, कुत्ता, हाथी, खच्चर, घोड़े, गेंडों की लाइनें बारी-बारी से चलती हैं।

केसरी कूवत ज्यादा कही, निपट अति बलवान।
ए ख्वाब देखाया तिन वास्ते, करने अर्स पेहेचान।। ३० ।।

बब्बर शेर सबसे अधिक शक्तिशाली कहा गया है। हे मोमिनो! तुमको यह झूठा खेल, सच्चे की पहचान कराने के लिए दिखाया है।

Nijanand App

केसरी कूवत कूदते, गरजत बिना हिसाब।
बिन मन आवे आसमान में, ऐसी उठक सिताब।। ३१ ।।

बब्बर शेर की ताकत, कूदना, दहाड़ना सब बेहिसाब हैं। उसकी छलांग की गति आसमान में मन की गति से भी तेज चलती है।

ए गिनती बेसुमार है, और बोलत मिलकर जब।
गरजत अर्स अंबर जिमी, बल देत देखाई तब।। ३२ ।।

इन बब्बर शेरों की गिनती बेशुमार है। जब यह सब मिलकर बोलते हैं तो आकाश में इनकी दहाड़ गरजती है। तब उसकी शक्ति का पता चलता है।

सब्द केसरी जब काढ़हीं, अंबर जिमी रहे गाज।
पड़घा उठे पृथ्वी पर्वतों, उठे उनथें अधिक आवाज।। ३३ ।।

केसरी (सिंह) जब दहाड़ते हैं तब आसमान और जमीन भी प्रतिध्वनि से दहाड़ती है। इनके दहाड़ की प्रतिध्वनि जब पहाड़ों से टकराती है तो पहाड़ों से और भी अधिक आवाज आती है।

क्यों कहूं बल बाघन को, ए जो ख्वाब में ऐसे जोर।
देह छोटी बड़ी कूवत, देत फीलों मद तोर।। ३४ ।।

बाघों की शक्ति का कैसे वर्णन करूं? सपने के संसार में ऐसे ताकतवर हैं कि छोटे तन के होने पर भी हाथियों की मस्ती उतार देते हैं।

बोलत बाघ विस्तार के, सब मिल एकै सोर।
गरजे सेती जानिए, इनों अंगों का जोर।। ३५ ।।

सब बाघ एक साथ मिलकर जब दहाड़ते हैं तो इनकी दहाड़ से ही इनकी शक्ति का अनुमान होता है।

छंछेक देखे छैल चीते, जुगत जलदी जोर।
काहिली ना अंग कबहूं, होत नहीं मन मोर।। ३६ ।।

चीतों की चंचलता (फुर्ती) और ताकत बड़ी जोरदार होती है। इनके अंग में कभी सुस्ती और मन में मक्कारी नहीं होती।

अश्व आगूं अति बड़े, अस्वारी के सिरदार।
सिर ऊंचे गरदन थांभत, थंभक थंभक थेई कार।। ३७ ।।

सवारी के आगे घोड़े चलते हैं। यह अपनी गर्दन ऊंची उठाकर ठुमक-ठुमक कर चलते हैं।

जब बोलत बदन विकास के, होत सबे हेहंकार।
दसों दिसा सब गरजत, पड़त सबे पुकार।। ३८ ।।

जब यह घोड़े हिनहिनाते हैं तो सब जगह दसों दिशाओं में इनकी हिनहिनाहट की आवाज गरजती है।

सब्द फील जब उठहीं, गरजत गंज गंभीर।
जिमी पहाड़ सब गाजत, और सैन्या सोहे सूर धीर।। ३९ ।।

हाथी जब आवाज करते हैं तो उनकी गम्भीर गर्जना से जमीन और पहाड़ सब गरजने लगते हैं। ऐसे शूरवीरों की सेना शोभायमान है।

Nijanand App

यों कई जातें पसुअन की, कई खूबी बल कहूं केता।
अपार बल खूबी अर्स की, नाहीं जुबां माफक है एता।। ४० ।।

यहां कई जातियों के पशु हैं। इनके बल की खूबी कैसे कहूं? इनकी बेशुमार शक्ति है। यह अखण्ड परमधाम की शोभा हैं। मेरी जबान इतना वर्णन नहीं कर सकती।

कई जातें हैं जानवर, चलते आगूं उड़त।
कई लेवें गुलाटियां, अनेक खेल खेलत।। ४१ ।।

कई किस्मों के जानवर आगे चलते हैं और उड़ते हैं। कई गुलाटियां भरकर खेल खेलते हैं।

छोटे छोटा या बड़े बड़ा, खेल देखावें सब।
सब सुख तबहीं पावहीं, धनी को रिझावें जब।। ४२ ।।

छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा सभी अपने खेल के करतब दिखाते हैं। इनको तभी सुख मिलता है जब श्री राजजी महाराज इन पर प्रसन्न होते हैं।

कई मुख बानी उचरें, तान मान गुन गान।
आठों जाम करत हैं, सुन्दर ध्यान बयान।। ४३ ।।

यह अपने मुख से तान मान से गुणगान करते हुए कई तरह की वाणी बोलते हैं। रात-दिन श्री राजजी महाराज में ही ध्यान रखते हैं और उन्हीं के ही गुणगान करते हैं।

नैन नीके चोंच सोभित, मीठी जुबां मुख बान।
खुसबोए गूंजें कई भमरे, कई तिमर अलापें तान।। ४४ ।।

इनके नेत्र अच्छे (सुन्दर) हैं। मुख और चोंच अच्छे (सुन्दर) हैं। जबान अच्छी है और बोली अच्छी (मधुर) है। यहां पर खुशबूदार भंवरे और तिमरा (झींगुर) राग अलापतें हैं।

आसमान छाया पंखियों, सब खूबी देखावत।
आप अपनी साधना, सब खेल की साधत।। ४५ ।।

आसमान में पक्षी जब उड़ते हैं तब बहुत सुन्दर शोभा हो जाती है। सभी पशु-पक्षी अपनी-अपनी कला से खेल दिखलाते हैं।

बिना हिसाबें बाजंत्र, पड़े एक ताली घोर।
जिमी अंबर सब गाजत, ए जुगत सोभा जोर।। ४६ ।।

यहां बेशुमार बाजे बजते हैं और नगाड़ों की भयंकर आवाज निकलती है। जिससे जमीन और आसमान सब गरजते हैं। यह बड़ी जोरदार शोभा है।

बाजे सब बजावहीं, बंदे बांदर बलवंत।
ओतो आपे बाजहीं पर, ए सेवा न छोड़त।। ४७ ।।

शक्तिशाली बन्दर सेवा में बाजे बजाते चलते हैं। बाजे तो अपने आप बजते हैं पर बन्दर अपनी सेवा नहीं छोड़ते।

Nijanand App

बाजे आपे चलहीं, पर पसु सेवा को उठाए।
इन बखत खूबी कहा कहूं, ए केहे न सके जुबांए।।४८ ।।

बाजे स्वयं चलते हैं, परन्तु पशु सेवा के वास्ते उठाकर चलते हैं। इस समय की खूबी का कहां तक बयान करूं? यह जबान कह नहीं सकती।

आगूं पीछूं सैन्या चले, खूबी देत बराबर।
जो दाएं बाएं मिसलें, कोई छोड़े ना क्यों ए कर।।४९ ।।

आगे पीछे सब सेना चलती है। इसकी बड़ी सुन्दरता है। दाएं-बाएं की जमातें अपनी सेवा किसी तरह से नहीं छोड़ती।

अस्वारी सबे सोभावत, मिसल आपनी जान।
हर जातें फौज अपनी बांधके, चले सब समान।।५० ।।

सब अपनी-अपनी जमात में सवारी में शोभा देते हैं। हर जाति के जानवर अपनी फौज की टोली बनाकर चलते हैं।

ऐसे बड़े हाथी अर्स के, और बड़े कई पसुअन।
जेता पसु पंखी अर्स का, तिन सबों अस्वारी मन।।५१ ।।

परमधाम के बड़े हाथी हैं और कई बड़े-बड़े पशु हैं। परमधाम में जितने भी पशु-पक्षी हैं उन सबकी चाल मनवेगी है।

देखो दिल विचार के, ए पसुओं का चलन।
उड़त हैं आसमान में, ए चारों तरफों सब धरन।।५२ ।।

सुन्दरसाथजी विचारकर देखो कि परमधाम के पशुओं की रहनी कैसी है? यह आसमान में उड़ते हैं और चारों तरफ जमीन पर घूमते हैं।

ऐसे सबे लसकर, सुमार नाहीं बल।
चिन्हार इस्क सबों को, बंदे कायम कदम तल।।५३ ।।

इन सभी फौजों की ताकत बेशुमार है। इन सबको श्री राजजी महाराज के इश्क की पहचान है। यह श्री राजजी महाराज के चरणों तले सेवक बनकर खड़े रहते हैं।

एक देखी जात फीलन की, तिन फीलों जात अनेक।
कई रंगों कई रूप हैं, सो कहां लों कहूं विवेक।।५४ ।।

एक हाथियों की जाति देखी। फिर उन हाथियों में भी कई जातियां हैं। उनके रंग कई रंग के हैं और रूप कई तरह के हैं। कहां तक उनका वर्णन करूं?

कई फौजें कई जिनस रंग, हर फौजें कई सिरदार।
तिन सिरदार तले कई फौजें, तिन एक फौज को नाहीं सुमार।।५५ ।।

कई तरह की फौजें हैं जो अपने अलग रंग के सिनगार किए हैं। उन फौजों में कई सिरदार हैं और उन सिरदारों के नीचे कई फौजें हैं, जबकि एक फौज की गिनती ही बेशुमार है।

Nijanand App

अब फौज गिनों दिल अपने, पीछे गिनो सिरदार।
सो सिरदार कई एक फौज में, तिन फौज करो निरवार।।५६।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अब फौजों की गिनती अपने दिल में करो। उसके बाद सिरदारों को गिनो जो एक फौज में कई होते हैं। तो फिर उस सेना का अपने दिल में विचार करो।

यों गिनती न होए एक जात की, जो कहे फील रंग अपार।
रंग रंग जातें कई कहीं, सो क्योंए न होए सुमार।।५७।।

एक जाति के ही हाथियों की गिनती नहीं होती तो यहां तो कई रंग के बेशुमार हाथी हैं और एक-एक रंग में कई-कई जातियां हैं, इसलिए इनकी गिनती सम्भव नहीं है।

गिनती न होए एक जातकी, तो क्यों कहूं इनों को बल।
एक चिड़िया उड़ावे कोट ब्रह्मांड, तो कौन बल फीलों मिसल।।५८।।

जब एक जाति की ही गिनती नहीं होती है तो इनकी शक्ति का कैसे बयान करूं? एक परमधाम की चिड़िया करोड़ ब्रह्माण्डों को उड़ा देती है तो परमधाम के हाथियों की ताकत कैसी होगी?

इन सब फीलों को पाखरे, और सिरिए जड़ाव रतन।
सो जवेर हैं अर्सके, और अर्सै का कुंदन।।५९।।

सभी हाथियों के ऊपर पाखरे (झूल) तथा सिर के ऊपर सिर पट्टी रत्न जड़ित है और जवेरों के जड़ाव और कुन्दन हैं। यह सब परमधाम के हैं।

और सबन की क्यों कहूं, ए एक कही मैं जात।
ए कैसी सोभा लेत हैं, दे दिल देखो साख्यात।।६०।।

मैंने हाथियों की एक जाति का वर्णन किया है। बाकी की शोभा कैसे कहूं? उनकी शोभा अपने दिल से विचार कर देखो।

अब और जातकी क्यों कहूं, जो है फीलों से बुजरक।
ए बुजरक साहेबी देखाई रूहों, पावने पटंतर हक।।६१।।

अब जो हाथियों से भी बड़े हैं उनकी जाति की महिमा कैसे बयान करूं? रूहों को परमधाम की साहिबी दिखाने के वास्ते ही यह खेल दिखाया है जिससे झूठे संसार और अखण्ड परमधाम के अन्तर को समझ सकें।

लेत सोभा अर्स जिमिएं, जब साहेब होत अस्वार।
ए जिन देख्या सो जानहीं, औरों पोहोंचे नहीं विचार।।६२।।

जब श्री राजजी महाराज सवारी करते हैं तो परमधाम की शोभा बढ़ जाती है। इस शोभा को जिसने देखा है वही समझते हैं। औरों के विचार नहीं पहुंच सकते।

कहा कहूं जात लसकर, एक जात को नाहीं पार।
तिन जात में अनेक फौजें, एक फौज को नाहीं सुमार।।६३।।

लश्कर की जातियों का कहां तक बयान करूं? एक जाति की ही फौज बेशुमार है। उस एक जाति की भी अनेक फौजें हैं। एक फौज की ही शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

तिन हर फौजों कई साहेबियां, करें पातसाहियां अनेक।
तिन पातसाहियों की क्यों कहूं, लवाजमें विवेक।।६४।।

हर फौज में कई साहिबियां (साहेबियां) और कई-कई बादशाहियां हैं। उन बादशाहियों की शोभा कैसे कहूं जो सवारी में चलते हैं।

जब चले सैर जिमीय की, जो बन बिगर थोड़ी रेत।
साफ जिमी अति दूर लों, तरफ पछिम की सुपेत।।६५।।

जब जमीन के ऊपर पच्छिम की चौगान में जहां वृक्ष नहीं हैं, सैर करने चलते हैं, तो रंग महल के पच्छिम में यह जमीन बहुत दूर तक सफेद दिखाई देती है।

इत दूर लों बन है नहीं, बोहोत बड़ो मैदान।
अस्वारी होए इसही तरफ, जब कबूं करें सुभान।।६६।।

इस पच्छिम की चौगान में बहुत दूर तक वन नहीं है। बहुत बड़ा मैदान है, इसलिए श्री राजजी महाराज जब कभी सवारी करते हैं तो यहां पर ही करते हैं।

मैदान अति दूर लो, दूर दूर अति दूर।
सूर आकास रोसनी, और उज्जल जिमी सब नूर।।६७।।

यह मैदान बहुत दूर तक फैला हुआ है। जहां नीचे चमकती हुई जमीन से और ऊपर आकाश से सूर्य का तेज चमकता है।

आगे सैर विध विध की, जब करें ऊपर सागर।
कई विध के रस पूरन, सब पैरत हैं जानवर।।६८।।

जब श्री राजजी महाराज सागर के ऊपर घूमने के लिए जाते हैं तो सागरों में कई तरह के जानवर इश्क के रस में डूबे हुए तैरकर रिझाते हैं।

जल किनारे बन हैं, कई विध की बैठक।
कई जल टापू पहाड़ में, कई मोहोलों माहें छूटक।।६९।।

सागर के किनारे बड़े-बड़े वन आए हैं और कई तरह की बैठकें हैं। सागरों के मध्य में पानी के बड़े-बड़े टापू पहाड़ जैसे हैं जिनमें अलग-अलग टापू महल शोभा देते हैं।

चलत पैरत कूदत, उड़ना याको काम।
मन की अस्वारी सबको, मन चाह्या करें विश्राम।।७०।।

यहां पर चलकर, तैरकर, कूदकर सभी श्री राजजी को रिझाते हैं और सबकी सवारी मनवेगी है और मनचाहा आराम करते हैं।

जो दिल चाहे तखतरवा, हजार बारे ले बैठत।
राज स्यामाजी बीच में, आकास में उड़त।।७१।।

जब इच्छा होती है कि श्री राजश्यामाजी व रूहें एक ही विमान में उड़ें तो मन में चाहते ही तखतरवा (विमान/एयरबस) आ जाता है।

Nijanand App

कबूं सैर इन खेल को, ऊपर चढ़े आसमान।
दिल चाहे सुख सबन को, देत रूहें प्यारी जान।।७२ ।।

कभी खेलते हुए सैर करते हैं। कभी ऊपर आसमान में घूमते हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज अपनी प्यारी रूहों को सब तरह का सुख देते हैं।

मन ऊपर चलत हैं, या जिमी जल बन।
या चढ़े आसमान में, ठौर फिरवले सबन।।७३ ।।

जमीन, जल, वन सभी जगह जहां मन चाहता है, तुरन्त वहीं (मनवेगी) पहुंच जाते हैं और आसमान में उड़ते हैं तथा सब जगह घूमते हैं।

पार नहीं आसमान को, जहांलो जानें तहांलो जाएं।
खेल कर पीछे फिरें, देखें पर्वत आए।।७४ ।।

आसमान का पारावार नहीं है। जहां तक इच्छा होती है वहां तक उड़ते जाते हैं और खेलकर पीछे लौटकर फिर पर्वतों को देखने जाते हैं।

दिल चाह्या रूहन को, हक दें हमेसा सुख।
पहाड़ बन मोहोल आकास जिमी, जित रूहों का होवे रुख।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को हमेशा मनचाहा सुख देते हैं। पहाड़ वन, महल, आकाश और जमीन जहां भी रूहों की इच्छा होती है, ले जाते हैं।

जो रुख होवे जल पर, या जोए या ताल।
या सुख मोहोलन में, देवें दायम नूरजमाल।।७६ ।।

जब जल की इच्छा होती है तो जमुनाजी या हौज कौसर तालाब पर जाते हैं या फिर रंग महल में श्री राजजी महाराज अखण्ड सुख देते हैं।

ए खूबी इन बखत की, हकें दई देखाए।
ए ख्वाब में प्यारी लगी, अर्स की ठकुराए।।७७ ।।

यह इस समय की शोभा है जो श्री राजजी महाराज ने रूहों को दिखाई है। अब संसार में बैठकर परमधाम की साहेबी अच्छी लगती है।

मैं तुमें कहूं मोमिनों, देखो दिल लगाए।
ऐसी साहेबी खसम की, जो रूह देख सुख पाए।।७८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! दिल से विचार करके श्री राजजी महाराज की साहेबी को देखो जिससे आत्मा को सुख हो।

इस वास्ते निमूना, ए जो करी कुदरत।
साहेबी अपनी जान के, करी बकसीस ऊपर उमत।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज ने नमूने के वास्ते ही यह माया का खेल दिखाया है और रूहों को अपनी साहेबी की पहचान के लिए यह तोहफा दिया है।

Nijanand App

तो क्या निमूना झूठ का, पर लेसी रूहों लज्जत।
ख्वाब बड़ाई देख के, विचारसी निसबत।। ८० ।।

तो फिर संसार के झूठे नमूने से और यहां की हिकमत देखकर रूहें विचार कर, परमधाम की लज्जत लेंगी।

ए साहेबियां देखाइयां, ख्वाब में उमत।
और देखाई साहेबी अपनी, सुख देने को इत।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी सखियों को स्वप्न के संसार में अपनी तथा उनकी साहेबियां दिखाई हैं जिससे उन्हें सुख की पहचान हो सके।

तफावत ए झूठ की, क्यों आवे बराबर सांच के।
पर रूहें सुख पावत हैं, देख अपनी साहेबी ए।। ८२ ।।

यह झूठ और सत्य का फर्क बराबर कैसे हो सकता है? परन्तु अपनी साहेबी देखकर रूहें सुखों का अनुभव करती हैं।

कहा कहूं ठकुराई की, और क्यों कहूं बुध बल।
क्यों कहूं इस्क पेहेचान की, और क्यों कहूं सुख नेहेचल।। ८३ ।।

इन रूहों की साहेबी, बुद्धि और बल तथा इश्क की पहचान और उनके घर के अखण्ड सुखों को कैसे कहूं?

क्यों कहूं मोहोल अर्स के, क्यों कहूं जिमी बन।
क्यों कहूं इन लसकर की, मिने पातसाहियां पूरन।। ८४ ।।

परमधाम के महल, जमीन, वन तथा फौज जिनमें इनकी पूरी साहेबी है, का कैसे वर्णन करूं?

ए बात है विचार की, कई जातें जानवर।
कई जातें पसुअन की, याको बल कहूं क्यों कर।। ८५ ।।

यह बात विचार करने की है वरना परमधाम के पशुओं की जातियां तथा उनकी ताक़त को कहना सम्भव नहीं है।

एक जात बाघन की, कहूं केते रंग तिन माहें।
इन रंग सुमार ना आवहीं, क्यों होवे हिसाब जुबांए।। ८६ ।।

बाघों की एक जाति जिनमें बाघों के कितने ही रंग हैं, उनकी हकीकत यहां की जबान से कैसे कहें?

अब कैसा बल समूह का, पसु और जानवर।
देखो साहेबी अर्स की, ले ब्रह्मांड बल नजर।। ८७ ।।

अब सम्पूर्ण पशुओं और जानवरों के समूह की ताकत को तथा परमधाम की साहेबी को संसार में बैठकर अपनी नजर से तौलो।

ए निमूना इन वास्ते, देखलाया रूहन।
झूठ कौन आगूं सांच के, पर बल न पाइए या बिन।। ८८ ।।

यह संसार का नमूना रूहों को पहचान करने के वास्ते दिखलाया है। अखण्ड सत्य (परमधाम) के आगे इस झूठे संसार की शक्ति कहां लगती है?

Nijanand App

इन सुपन जिमी में बैठ के, क्यों कहूं ठकुराई अर्स।
ए गिरो विचारें सुख पावसी, जो होसी अरस-परस।। ८९ ।।

इस स्वप्न की जमीन में बैठकर परमधाम की साहेबी का कैसे बयान करें? यह मोमिन विचारकर सुख लेंगे, जब वह संसार की तथा परमधाम के सुख की तुलना करेंगे।

ए विचार विचार विचारिए, तो पाइए लसकर बल।
सुमार तोभी न पाइए, जिमी अपार नेहेचल।। ९० ।।

विचार-विचार कर देखें तो फौज की ताकत का पता लगता है, परन्तु अखण्ड परमधाम की गिनती और शोभा बेशुमार है। जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

क्यों कहूं जिमी अपार की, क्यों कर कहूं मोहोलात।
क्यों कहूं जोए हौज की, क्यों कहूं नूर जात।। ९१ ।।

बेशुमार जमीन की शोभा कैसे कहूं? मोहोलातों का वर्णन कैसे करूं? जमुनाजी और हौज कौसर तालाब और दूसरी सभी नूरी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

क्यों कहूं अर्स जिमी की, क्यों कहूं हक सूरत।
क्यों कहूं खासी रूहकी, क्यों कहूं रूहें उमत।। ९२ ।।

परमधाम की जमीन श्री राजजी महाराज के स्वरूप तथा श्री श्यामाजी महारानी और रूहों की सिफत कैसे बयान करूं?

क्यों कहूं इन सुख की, क्यों कहूं इन विलास।
क्यों कहूं इस्क आराम की, क्यों कहूं रमूजें हांस।। ९३ ।।

यहां के सुख, विलास, इश्क, आराम तथा हंसी के आनन्द का वर्णन कैसे करूं?

इन अर्स का खावंद, सो धनी अपना हक।
ए देखो साहेबी अर्स की, ए मोमिनों बुजरक।। ९४ ।।

इसी परमधाम के मालिक ही हमारे श्री प्राणनाथजी हैं। उनकी साहेबी को परमधाम के मोमिनो देखो।

देखो साहेबी अपनी, मेरा खसम नूरजमाल।
जब देखत हों दिल ल्याए के, मेरी रूह होत खुसाल।। ९५ ।।

अपनी साहेबी देखो और मेरे साहब की साहेबी देखो। मैं जब दिल लगाकर देखती हूं तो मेरी आत्मा बहुत खुश होती है।

क्यों न होए खुसालियां, देख अपनी ठकुराए।
और नाहीं कोई कहूं, ए मैं देख्या चित्त ल्याए।। ९६ ।।

हे मोमिनो! अपनी साहेबी देखकर तुम्हें खुशी क्यों न हो मैंने चित्त में विचारकर देखा है कि ऐसे श्री राजजी महाराज के बिना दूसरा कोई कहीं नहीं है।

मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूरजलाल।
सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूरजमाल।। ९७ ।।

मेरे दूल्हा श्री राजजी महाराज के ही नूरी अंग अक्षर ब्रह्म हैं जो नित्य ही हमारे धनी के दर्शन करने आते हैं।

Nijanand App

सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल।। ९८ ।।

हमारे धनी की साहेबी अखण्ड है। अपने श्री राजजी महाराज के सुख अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज से इतना सुख जो अपने को मिलता है वह अनादि और अखण्ड है।

बड़ी बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरक सदा बेसक।
और सब याके खेलौने, सब पर एकै हक।। ९९ ।।

अपने श्री राजजी महाराज की साहेबी की महिमा अति भारी है और सब इनके खिलौने हैं। सबके मालिक एक श्री राजजी महाराज ही हैं।

महामत साहेबी हककी, मैं खसम अंगका नूर।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर।। १०० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के अंग श्यामा महारानी हैं और श्यामा महारानी के अंग हम सब रूहें हैं। इस तरह सब परमधाम में एक वाहेदत है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १४३७ ।।

तीनों सरूपों की पेहेचान बल अर्स की तरफ का

पेहेले किया बरनन अर्स का, रूह अल्ला का केहेल।
अब चितवन सें केहेत हों, जो देत साहेदी अकल।। १ ।।

अब तक परमधाम का जो वर्णन किया है वह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के कहे के अनुसार किया है। अब अपनी जागृत बुद्धि की अक्ल से चितवन करके बयान करती हूं।

जब जानों करूं बरनन, तब ऐसा आवत दिल।
जब रूह साहेदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल।। २ ।।

जब मैं वर्णन करने लगती हूं तो दिल में ऐसा आता है जैसी मेरी आत्मा गवाही देती है कि वैसा वहां परमधाम में होना चाहिए।

इन विध हुआ है अव्वल, दई रूह साहेदी तेहेकीक।
जो कही बानी जोस में, सो साहेब दई तौफीक।। ३ ।।

अब तक जो मैंने कहा है, उसकी मेरी आत्मा ने भी गवाही दी है। जो वाणी मैं अब कहती हूं, वह सब श्री राजजी महाराज के जोश से कहती हूं।

हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे।
सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए।। ४ ।।

जिस वाणी की मुझे जिस समय आवश्यकता होती थी श्री राजजी महाराज मेहर कर वही वाणी जोश से मुझे देते थे और जो मेरी आत्मा गवाही देती थी वही चौपाइयां उतरती गईं।

Nijanand App